सीखने के मानक

प्रथम भाषा - हिन्दी

पहली कक्षा से दसवीं कक्षा तक

कर्नाटक सरकार

कर्नाटक प्रौढ़ शिक्षा परीक्षा मंडली

छठा क्रास, मल्लेश्वरम, बेंगलूरु - 560 003

कर्नाटक सरकार

कर्नाटक प्रौढ़ शिक्षा मंडली

छठा क्रास, मल्लेश्वरम, बेंगलूरु

सीखने के मानक

हिन्दी प्रथम भाषा

पुस्तक रचना - समिति

अध्यक्ष : श्री जी. अश्वत्थनारायण
अध्यक्ष (से.नि.) हिन्दी विभाग
वी.वी. पुरम कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
बेंगलूरु - 04

सदस्य :

1. **श्री वासुदेव मूर्ति. एस.**
   हिन्दी अध्यापक
   सरकारी हाईस्कूल
   जी.बी. सरगूर. एच.डी.कोटा (तालूका)
   मैसूर जिला

2. **श्री शशिधर सिंह**
   हिन्दी सह-शिक्षक
   सरकारी हाईस्कूल
   चंदगालु, के.आर्. नगर (तालूका)

मैसूरु जिला

3. **श्री मंजुनाथ डी.**
हिन्दी शिक्षक
सरकारी हाईस्कूल
कोलगि, शिकारीपुर (तालुका)
शिमोगा जिला

4. **श्रीमती डा. पी.वी. पद्मिनी**
हिन्दी शिक्षिका
सरकारी बालिका हाईस्कूल
नंजनगूडु, मैसूर जिला

5. **डॉ. श्रीरंगा एन.**
हिन्दी अध्यापक
सरकारी हाईस्कूल्
श्रीरामनगर
एम. होसकोप्पल. पोस्ट
हासन जिला ।

*****

आशय हमारा .....

वर्तमान युग विज्ञान का युग है, व्यापार - वाणिज्य का युग है। मानव मानव न रहकर यंत्रवत् होता जा रहा है। शिक्षा का लक्ष्य ज्ञानार्जन न रहकर भौतिक सुख-साधनों को बड़ी मात्रा में जुटाने की सीमित परिधि रहा है। ऐसे समय में भाषा एवं साहित्य का पठन-पाठन हाशिए पर चला जा रहा है जो कि खेद की बात है।

हिन्दी भारत की एक समृद्ध और संपन्न भाषा है। भारत की राष्ट्रभाषा बनने का सौभाग्य इसे प्राप्त हुआ है। भारत के सभी राज्यों की पाठशालाओं में हिन्दी पढ़ायी जा रही है। हिन्दीतर राज्यों में हिन्दी पहली और तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। समय - समय पर भारतीय भाषाओं में पाठ्य क्रम का पठन - पाठन नये - नये आयाम अपना रहा है। कर्नाटक सरकार सर्वशिक्षा अभियान के तहत हिन्दी को प्रथम तथा तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाने की दिशा में नये - नये रास्ते ढूंढ रही है। शिक्षाविदों और अनुभवी हिन्दी अध्यापकों के मार्गदर्शन में हिन्दी के पठन पाठन में नूतन एवं सशक्त मार्ग ढूंढने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

इस दृष्टि से हिन्दी के पाठ्य-क्रम की पढ़ाई में ऐसे-ऐसे रास्ते ढूँढे जा रहे हैं कि जिन पर चलकर हिन्दी अध्यापक अपने पाठन-क्रम को सुंदर, सरल तथा सुबोध आयाम दे सकते हैं। यंत्रों की तरह पढ़ाने के बदले पाठों को रोचक एवं सरल, आकर्षक शैली में पढ़ाने के लिए यहाँ सीखने के और सिखाने के मानक निर्धारित किए गए हैं। इन मानकों को लक्ष्य में रखकर अगर अध्यापक पढ़ायेंगे तो विद्यार्थी हिन्दी बड़ी सरलता से, बड़े उल्लास और आनंद से सीख सकते हैं। हमारा लक्ष्य यह रहा है कि विद्यार्थी - गण सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना - इन चार स्तरों को पार करके अपनी ज्ञान - परिधि विस्तृत कर सकते हैं। विद्यार्थियों में सोचने - विचारने की क्षमता बढ़े, और वे संपूर्ण और सुयोग्य मानव बने, भारत की गरिमा बढ़ायें एवं विश्व-नागरिक बनें - सर्व शिक्षा अभियान का यह लक्ष्य सफल हो, यही हमारी मंगल - कामना है,

****